P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजनीति विज्ञान का परम्परागत दृष्टिकोण : एक संक्षिप्त अध्ययन

Traditional Approach to Political Science: A Brief Study

Paper Submission: 15/05/2021, Date of Acceptance: 24/05/2021, Date of Publication: 25/05/2021

इरसाद अली खाँ
सह आचार्य,
राजनीति विभाग,
राजकीय बांगड. महाविद्यालय,
डीडवाना, राजस्थान, भारत

सारांश

21 वीं शताब्दी में वैश्वीकरण व उदारीकरण, निजीकरण, संचार क्रांति, तकनीकीकरण जैसी सुविधाएं बढती जा रही है। जैसे कि विद्वान मानते है कि राजनीति विज्ञान ईसा पूर्व चौथी शताब्दी से बना हुआ है और निरन्तर गतिशील रहकर वर्तमान में भी बना हुआ है। हम कह सकते है कि विश्व के किसी भी अनुशासन अथवा विद्या की परिभाषा करना बहुत कठिन कार्य होता है। प्रत्येक विषय के इतने अधिक पहलू होते है कि उन सबकी एक परिभाषा नहीं रखी जा सकती। जैसा कि हम जानते है कि मानव स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी है, समाज के बिना मनुष्य का कोई महत्व नहीं होता है। समाज में रहते हुए मनुष्य के राजनीतिक सम्बन्ध होते है और ऐसे मनुष्य सम्बन्धों को लेकर जिस विज्ञान का विकास होता है, उसे राजनीति विज्ञान की संज्ञा देते है। जैसा कि हमें ज्ञात है कि राजनीति विज्ञान का स्वरूप, अध्ययन क्षेत्र, अध्ययन के उपकरण, उपागम, सिंद्धान्त समय के अनुसार परिवर्तित और परिवर्धित होते रहते है। जो विज्ञान ऐसा नहीं कर पाये वे समाप्त हो गये। परम्परागत राजनीति विज्ञान (Traditional Political Science) को शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धान्त (Classical Political Theory) अथवा आदर्शात्मक (नैतिकतावादी) राजनीतिक सिद्धान्त (Normative Political Theory) भी कहा जाता है। इसका उदय पाश्चात्य जगत में माना जाता है, जिसमे ईसा पूर्व छठ्ी सदी से बीसवीं सदी में प्रायः द्वितीय विश्व युद्ध से पहले तक जिस दृष्टिकोण का प्रचलन रहा है उसे अध्ययन सुविधा की दृष्टि से परम्परागत राजनीति विज्ञान कहा जाता है। परम्परागत राजनीति विज्ञान के निर्माण एवं विकास में अनेक राजनीतिक चिन्तकों का योगदान रहा है, जिनमें प्रमुखतया सुकरात, प्लेटो (रिपब्लिक), अरस्तू (पॉलिटिक्स) रोमन सिसरो, मध्य युग में सेण्ट आगस्टाइन (The city of God), सेण्ट एक्विनास, हॉब्स, लॉक, रूसो (सोशल कान्ट्रेक्ट), मान्टेस्क्यू, काण्ट, हीगल, ग्रीन, बर्क, अर्नेस्ट बार्कर, हैराल्ड जे. लास्की इत्यादि हैं। आधुनिक युग में भी ऐसे राजनीतिक विद्वान हैं, जिन्होंनें परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त का समर्थन किया है और आधुनिक सन्दर्भों में उसके विकास का प्रयत्न भी किया है, जैसे लियोस्ट्रास, अल्फ्रेड कोबन, ईरिक वोगोलिन, माइकेल ओकशॉट, हन्ना आरेण्ट आदि। इन विचारकों के विचार व्यक्तिपरक तथा उनकी पद्धति अधिकांश अंशों में निगमनात्मक है। इस प्रकार परम्परावादी और आधुनिक दृष्टिकोण काल खण्डों पर नहीं, वरन् विचारदर्शन की प्रकृति पर आधारित है।

In the 21st century, facilities like globalization and liberalization, privatization, communication revolution, technology are increasing. As scholars believe that political science has been made since the fourth century BC and has remained in constant motion even in the present day. We can say that it is a very difficult task to define any discipline or discipline of the world. Each subject has so many aspects that one cannot define them all. As we know that human being is a social animal by nature, without society man is of no importance. Human beings have political relations while living in society and the science which develops about such human relations is called political science. As we know that the nature, study area, study tools, approaches, principles keep on changing and changing according to the time. The sciences which could not do this, they perished. Traditional political science (Jinkapijpvidans chispijabins sabpammidmi) is also called classical political theory (Bssempabins sippijbins zimvital) or normative (moralistic) political theory; Chhavitunjpaam chispijabins zimvital. Its rise is considered to be in the western world, in which the approach which has been prevalent in the sixth century BC to the twentieth century, often before the Second World War, is called traditional political science from the point of view of study convenience. Many political thinkers have contributed to the formation and development of traditional political science, most notably Socrates, Plato (Republic), Aristotle (Politics), Roman Cicero, St. Augustine in the Middle Ages (Jim Baupjal and Vivek), St. Aquinas, Hobbes, Locke, Rousseau. (Social Contact), Montesquieu, Kant, Heigl, Green, Burke, Ernest Barker, Harald J. Laski etc. Even in the modern era, there are political scholars who have supported traditional political theory and tried to develop it in modern contexts, such as Leostrass, Alfred Koban, Erik Vogolin, Michael Oakeshott, Hannah Arendt etc. The views of these thinkers are subjective and their methodology is in most parts deductive. In this way the traditional and modern approach is not based on time blocks, but on the nature of philosophy.

मुख्य शब्दः पोलिस, दृष्टिकोण, आनुभविक, नैतिक, भौतिकवादी, नगर राज्य, प्रभुस∧KI, सार्वभौमिकता, आदर्शवाद, पुनर्जागरण, संस्थागत, निगमनात्मक, राष्ट्र–राज्य, लोक कल्याणकारी, विचारधाराओं, एक विश्व ग्राम, नियोजित आर्थिक विकास, परानुभवादी तथा संस्कृति संरूपण इत्यादि।

Police, Attitude, Empirical, Ethical, Materialist, City State, Sovereignty, Sovereignty, Idealism, Renaissance, Institutional, Inclusive, Nation-State, Public Welfare, Ideologies, One World Village, Planned Economic Development, Paranoia and Culture Modification etc.

प्रस्तावना

राजनीति विज्ञान एक अति प्राचीन विषय रहा है परन्तु अतीत में इसे एक स्वतन्त्र विषय के रूप में नहीं स्वीकारा जाता था। इसका अध्ययन दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, आचारशास्त्र, विधिशास्त्र, इतिहास इत्यादि में किया जाता था। समाजशास्त्रों मे राजनीति विज्ञान ही एक ऐसा विषय है, जिसकी कोई निश्चित एवं स्पष्ट शब्दावली नहीं है। उदाहरणतः जो विषय व्यक्ति, राज्य औरसरकार से सम्बन्धित है उसे राजनीति, राजनीतिक सिद्धान्त, राजनीति विज्ञान एवं राजनीति दर्शन के विविध नामों से जाना जाता है। इसके अलावा राजनीति विज्ञान की शब्दावली अनिश्चित एवं अस्पष्ट होने से इसके विषय को समझने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई है। राजनीति विज्ञान के सन्दर्भ में इन विद्वानों के अनुसार व्यक्त किया गया है कि

आर.जी.गैटिल के अनुसार ''राजनीति विज्ञान राज्य के अतीतकाल, आधुनिक तथा भावी स्वरूप का, राजनीति संगठन तथा राजनीतिक कार्यों का, राजनीतिक संस्थाओं तथा राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन करता है।''

लावेल के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान के अध्ययन में आधुनिक विज्ञान की प्रथम आवश्यकता की कमी है। इसकी शब्दावली ऐसी है, जो शिक्षित व्यक्तियों को भी समझ में नहीं आती।''

जेलिनेक (Jelineck) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान के अतिरिक्त और कोई ऐसा विज्ञान नहीं है, जिसे पारिभाषिक शब्दों की उसके सामने आवश्यकता हो।''

राजनीति विज्ञान के नाम विभेद का अध्ययन अलग से किया जाएगा परन्तु इससे पूर्व राजनीति विज्ञान का आधुनिक युग में न केवल एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकारा गया है अपितु अन्य सामाजिक विज्ञानों के सन्दर्भ में इसका पर्याप्त विकास भी हुआ है। इस विकास का परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण राजनीति विज्ञान का अध्ययन अग्रलिखित दो प्रमुख दृष्टिकोण के आधार पर किया जाने लगा है– 1. राजनीति विज्ञान का परम्परागत दृष्टिकोण 2. राजनीति विज्ञान का आधुनिक दृष्टिकोण। इन दोनों दृष्टिकोणों के आधार पर राजनीति विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं प्रकृति का अध्ययन इस अध्याय में किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

हम राजनीति विज्ञान के केवल परम्परागत दृष्टिकोण (उपागम) की ही व्याख्या इन उद्देश्यों के तहत करेंगे

1. राजनीति विज्ञान के अर्थ एवं परिभाषाओं को केवल परम्परागत शास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्त करेंगे।
2. इसमें विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अध्ययन करेंगे।
3. राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण में प्रकृति एवं क्षेत्र को समझ सकेंगे।
4. राजनीति विज्ञान के महत्व एवं उपयोगिता के आयाम को ज्ञात कर सकेंगे
5. राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण की भूमिका को उसके उद्भव एवं विकास के माध्यम से जान सकेगे।
6. राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि का अध्ययन करेंगे।
7. राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के साथ उसके विविध प्रकारों का अध्ययन करेंगे।
8. राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण की विशेषताओं को ज्ञात करेंगे।
9. राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण के विशेष पहलुओं की पहचान कर सकेंगे।

शोध प्रविधि एंव परिकल्पना

इस अध्याय का व्यक्तिवृत अध्ययन (Case Study) किया जाएगा, पूर्व में लिखित पुस्तक– पत्रिकाओं के माध्यम से द्वितीय स्रोत से तथ्यों का संकलन करके प्राचीन काल से लेकर 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक तथा 20 वीं शताब्दी के परम्परागत विचारकों के विचारों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया। इसमें राजनीतिक विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र, विशेषताओं का केवल परम्परागत स्वरूप का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला गया है तथा अनेक विद्वानों द्वारा दिये गये चार्ट को दर्शाया गया है। राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण में हम यह ज्ञात करेंगे कि किस प्रकार से राजनीति विज्ञान ने अपने स्वरूप को बनाया तथा वर्तमान काल तक सतत् विकासरत् है, इसमें हम राज्य सरकार तथा उसकी संस्थाओं के साथ मानव का भी अध्ययन करके उसके विकास की गाथा का अध्ययन करेंगे तथा वर्तमान राजनीति विज्ञान में आयी गतिशीलता एंव परिर्वतनशीलता का अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

साहित्य अवलोकन

वर्तमान समय में ही नहीं अपितु पूर्व में राजनीतिक विज्ञान के परम्परागत स्वरूप (दृष्टिकोण) के सन्दर्भ में हमें बहुत सारी सामग्री मिल जाती है तथा इस साम्रगी को इस अध्याय में एकत्रित एवं सुव्यस्थित करने का प्रयास किया गया है, विश्व कि अनेक भाषाओं में प्रत्येक देश में इसका अध्ययन विस्तृत रूप में किया गया है। डॉ. मधुमुकुल चतुर्वेदी ''राजनीति विज्ञान के मूल आधार, पृष्ठ 1 से 16 तक, आर. जी गैटल की पुस्तक 'इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल साइन्स' पृष्ठ 4, गिलक्राइस्ट ''प्रिंसिपल ऑफ पॉलिटिकल साइन्स'' पृष्ठ 2 डॉ. पुखराज जैन राजनीति सिद्धान्त सन् 2018, साहित्य भवन

पब्लिकेशन आगरा, पृ. 1–26 तथा डॉ. नन्दिनी उप्रेती, राजनीति विज्ञान के मूल आधार राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2003, पृष्ठ 1–23, पी. के चड्डा राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त, आदर्श प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ 1–16 आदि का अध्ययन किया गया। परम्परागत राजनीति विज्ञान के क्षेत्र सन्दर्भ में प्रो.पी.के.मुखर्जी (Prof. P.K. Mukharji Scope of Political Science,Indian Journal of Political Science, Oct-Dec. 1954) ने लिखा था कि, ''राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में राजनीति दर्शन एवं सिद्धान्त, राजनीतिक संस्थाएँ, विभिन्नवाद, राज्य का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप, राजनीतिक संगठन के विधियेत्तर (extra - legal) स्वरूप, जैसे राजनीतिक दल व दबाव समुह आदि सम्मिलित है।''

राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण के विचारक

प्राचीन काल के विचारको से लेकर मार्क्स तक परम्परागत दृष्टिकोण के विचारको में आते है। जैसे–प्लेटो, अरस्तू, रोमन सिसरो, एक्वीनास, ऑगस्टाइन, हॉब्स, लॉक, रूसो, माण्टेस्क्यू,काण्ट, हीगल, ग्रीन, बर्क, आर्नेस्ट बार्कर, हैरोल्ड जे. लास्की, मार्क्स, तथा वर्तमान में (आधुनिक युग में) लियोस्ट्रास, अल्फ्रेड कोबन, वोगेलिन, माइकेल ओकशॉट, हन्ना आरेण्ट इत्यादि विचारक है।

राजनीतिक विज्ञान का उद्‌भव एवं विकास

इस विश्व में विशेष रूप से मानव में जब से बुद्धि का संचार हुआ और विकास हुआ है तब से किसी न किसी रूप में राजनीति चली आ रही है, परन्तु इसका अध्ययन हमें लिखित रूप में भारत एवं पाश्चात्य सहित्यों में उल्लेख मिलना है। पाश्चात्य विचारक प्लेटो व अरस्तू से लेकर वर्तमान काल तक राजनीतिक विज्ञान ने प्रगति की है। लगभग 500 ईसा पूर्व यूनानी छोटे–छोटे नगर राज्यों में रहते थे और इन नगर राज्यों की स्थिति एवं राजनीतिक गतिविधियों से सम्बन्धित ज्ञान को पॉलिस (Polis) पॉलिटिक्स (Politics) कहा जाता था। हम मानते हैं कि राजनीति उतनी ही पुरातन है जितनी की मानच सभ्यता। यूनानी काल की समाद्धि के पश्चात् रोमन काल और इन दो कालों के राजनीतिक चिन्तन में तात्विक अन्तर देखने को मिलता हैं। रोमन काल में धीरे–धीरे नगर राज्य लुप्त होने लगे तथा उनके स्थान पर साम्राज्यों ने ले लिया। मध्यकाल (500 ईसवी से लेकर 1400 ईसवी तक) का राजनीति विज्ञान अथवा राजनीति, धर्म के चारों और बुनी गई अर्थात् धर्म प्रधान राजनीति बन गयी। पुनजार्गरण और धर्म सुधार आन्दोलनों मे आधुनिक युग की सुगबुगाहट ने राजनीति विज्ञान को परिवर्तित कर दिया। इस समय धर्मनिरपेक्षता का वातावरण तथा व्यक्तिवाद, उदारवाद इसके साथ ही मार्क्सवदी चितन की तरफ से पूँजीवाद का विरोध करना और समाजवाद व साम्यवाद की और बढ़ना आदि देखने को मिलते है। लगभग 1903 ईसवीं में अमरीका के शिकागो विश्वविद्यालय के राजनीतिक विद्वानों ने परम्परागत स्वरूप को नकार दिया। इन्होंने अपना पूरा बल राजनीति को विज्ञान बनाने में बल दिया, जिसे हम व्यवहारवादी आन्दोलन के नाम से जानते है व्यहारवाद की कमी के कारण स्वयं डेविड ईस्टन उत्तर–व्यवहारवाद के सिद्धान्त को अपनाया। आज वर्तमान में विश्व ग्राम की कल्पना साकार होती नजर आ रही है इसका कारण है इंटरनेट जैसे संचार तकनीक।

राजनीति विज्ञान की उपयोगिता

इस विश्व में मानव के संगठन कई प्रकार के होते है, उसका एक संगठन का वह रूप जिसे राज्य कहा जाता है। उपयोगिता के हिसाब से मानव की उन्नति के लिए राज्य का बड़ा महत्व है क्योंकि इसके बिना मानव के जीवन में खतरा उत्पन्न हो जायेगा और सुरक्षित नहीं रह पायेगा। राज्य से ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव है, वर्तमान राज्य प्रणाली में लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा ने इसे और पुष्ट कर दिया है अतः यह विषय राज्य राजनीति विज्ञान के बिना सम्भव नहीं हो सकता है।

राजनीति विज्ञान का परम्परागत दृष्टिकोण का अर्थ एवं परिभाषा ,

परम्परागत दृष्टिकोण के अनुसार राजनीति विज्ञान की परिभाषा, प्रकृति एवं क्षेत्र अग्रलिखित प्रकार से हैः–

अनेक विद्वानों का मत है कि प्राचीन काल से ही राजनीति विज्ञान 'राज्य' नामक संस्था के अध्ययन का विषय रहा है। ''राजनीति'' शब्द की उत्पत्ति, जो अंग्रेजी शब्द Politics (पॉलिटिक्स) का पर्यायवाची है, यूनानी (Greek) शब्द पोलीस (Polis) से हुई है, जिसका अर्थ हैं, 'नगर राज्य' (City State) । मूलतः पोलिस, यूनानियों के अनुसार नगर को काफी ऊँचाई से देखता हुआ, आत्मरक्षा की दृष्टि से बनाया गया किलेबन्दी का स्थान था। लगभग 2600 वर्ष पूर्व एथेन्सवासियों ने एक ऐसा ही पहाडी किला 'अक्रोपोलिस का निर्माण किया था। सार्वजनिक मामलों पर विचार–विमर्श के लिए वे वहीं एकत्रित होते थे और यही '' पोलिस '' (Polis) शब्द धीर–धीरे एक संगठित समाज था एक ऐसी शक्ति के लिए प्रयोग किया जाने लगा जो दूसरी समान शक्तियों या समुदायों से सम्बन्ध स्थापित करने में लगी हो। इस प्रकार पोलिस, नगर और नगर के आस–पास बसे लोगो का ऐसा समूह समझा जाने लगा, जो वास्तविक या काल्पनिक रक्त–सम्बन्धों से बँधा, सामूहिक सुरक्षा के लिए संगठित एवं समूह के सदस्यों तथा उनके आश्रितो के मध्य सम्बन्धों को सुव्यवस्थित रखता हो, उसमें धार्मिक पूजा, क्रीडा तथा कला की समान सुविधा तथा वस्तुओं और सेवाओ के उत्पादन में श्रम–विभाजन का भाव भी निहित था। ऐसे पोलिस (Polis) के सम्बन्ध में, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व राजनीति विज्ञान के पिता अरस्तू ने या पोलिस–विषयक भाषण माला दी थी। वही आगे जाकर Politics ग्रन्थ बना। इस प्रकार से यूनानी विद्वानों के अनुसार ''पॉलिटिक्स'' एक ऐसा विषय था, जिसके अन्तर्गत ''नगर राज्य'' का अध्ययन किया जाता था। धीरे–धीरे राज्य का स्वरूप बदला और प्राचीन नगर–राज्यों की जगह आधुनिक राष्ट्र–राज्यों की स्थापना हुई और इसके साथ ही इस विषय का भी विकास हुआ और उसे राजनीति (Politics) के स्थान पर राजनीति विज्ञान (Political Science) कहा जाने लगा है। अतः आधुनिक समय में इसका सम्बन्ध राज्य, सरकार, प्रशासन,

व्यक्ति तथा समाज के विविध सम्बन्धों के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ज्ञान एवं अध्ययन से है। परम्परागत दृष्टिकोण में राजनीति विज्ञान को निम्न चार अर्थों में परिभाषित किया जा सकता है।

''राज्य'' के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि राजनीति शब्द की उत्पत्ति पोलिस (Polis) से हुई है, जिसका तात्पर्य 'नगर राज्य' से है, अतः परम्परागत राजनीति विज्ञान का स्थायी और केन्द्रिय तत्व स्वयं राज्य ही रहा है, अतः इस विषय के अन्तर्गत राज्य का ही अध्ययन किया जाना चाहिए, ऐसा मानने वाले विद्वानों में गार्नर, ब्लंट्शली, गैरिस, कौटिल्य, गुडनोव, जेम्स एक्टन और जकारिया इत्यादि हैं। उनकी परिभाषायें निम्नलिखित प्रकार से है :–

1. गेटेल (Gettel) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है।
2. गार्नर (Garner) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान के अध्ययन का प्रारम्भ और अन्त राज्य के साथ होता है।''
3. ब्लंट्शली (Bluntschli) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है, जिसका सम्बन्ध राज्य से है और जो यह समझने का प्रयत्न करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या हैं उसकी आवश्यक प्रकृति क्या है, उसकी किन विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति होती है तथा उसका विकास कैसे हुआ है।
4. जकारिया के अनुसार, ''राजनीति शास्त्र उन मूलभूत सिद्धान्तों को व्यवस्थित रूप से इंगित करता है, जिनके आधार पर राज्य की सर्वांगीण व्यवस्था की जा सके तथा जिसके प्रतिपादन द्वारा सम्प्रभु शक्ति को लागू किया जा सके।''
5. गैरिस (Garies) के शब्दों में, ''राजनीति विज्ञान राज्य को एक शक्ति संस्था के रूप में मानता है, जो राज्य के समस्त सम्बन्धों, उसकी उत्पत्ति, उसके स्थान, उसके उद्देश्य, उसके नैतिक महत्व, उसकी आर्थिक समस्याओं, उसके जीवन की अवस्थाओं, उसके वित्तीय पहलू आदि का विवेचन करता है।''
6. डॉ. ए.डी् के अनुसार, ''राजनीति शास्त्र राज्य विषयक ज्ञान की समग्रता एवं राज्य सिद्धान्त का अध्ययन है।''
7. कौटिल्य के अनुसार, ''राजनीति शास्त्र वह शास्त्र है, जो एक सुव्यवस्थित समाज या राज्य सम्बन्धी विविध विषयों का अध्ययन करता है।''
8. जेम्स के अनुसार'' राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है।''

''सरकार'' के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान

लीकॉक और सीले जैसे विद्वानों ने परम्परगत राजनीति विज्ञान को केवल सरकार का अध्ययन माना है, न कि राज्य को। उनका मानना है कि सरकार एक मूर्त व प्रत्यक्ष संस्था है जबकि राज्य एक अमूर्त संरचना और सरकार के पास प्रभुसत्ता के प्रयोग करने का अधिकार होता है, उल्लेखनीय है कि सरकार के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान का आरम्भ अमेरिका में हुआ। अतः सरकार का ही अध्ययन ही राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत किया जाना चाहिए। उनकी परिभाषायें निम्न प्रकार से हैः–

1. लीकॉक (Leacock) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान सरकार से सम्बद्ध है।''
2. सीले (Seeley) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान शासन के तत्वों का उसी प्रकार से पता लगाता है, जिस प्रकार अर्थशास्त्र धन का, जीव विज्ञान जीवन का, बीजगणित अंकों का तथा ज्यामिति स्थान एवं दूरी का।''

''राज्य एवं सरकार'' के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान

गिलक्राइस्ट, डिमॉक और पॉल जैनेट जैसे विद्वानों ने राजनीति विज्ञान में राज्य एवं सरकार दोनों को समान महत्व दिया है। उनका मानना है कि राज्य एवं सरकार का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है और इनमें से किसी एक के अभाव में दूसरे का अध्ययन ही नहीं किया जा सकता है जैसाकि ज्ञात है कि राज्य एक अमूर्त संरचना है और सरकार उसका मूर्त एवं भौतिक संरचना है तथा सरकार प्रभुसत्ता का प्रयोग करती है। राज्य एवं सरकार के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान की परिभाषायें निम्न प्रकार से हैः–

1. डिमॉक (Dimock) के अनुसार ''राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध राज्य तथा उसके साधन सरकार से है।''
2. गिलक्राइस्ट (Gilchrist) के अनुसार ''राजनीति विज्ञान राज्य व सरकार की सामान्य समस्याओं का अध्ययन करता है।''
3. ए.डी आर्शीवाद्म के अनुसार राजनीति विज्ञान राज्य और शासन दोंनों का ही विज्ञान है।''
4. पॉल जैनेट (paul janet) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान समाज विज्ञानों का वह अंग है, जिसमें राज्य के आधार और सरकार के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है।''हरमन हैलर के अनुसार राजनीति विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूप का निर्धारण उसकी मानव विषयक मान्यताओं द्वारा होता है।''

''मानव–तत्व'' के अध्ययन के रूप में राजनीति विज्ञान

हरमन हैलर, लास्की जैसे विद्वानों ने मानव–तत्व को राजनीति विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसके अध्ययन के अभाव में राजनीति विज्ञान का कोई भी अध्ययन सम्पूर्ण है। राजनीतिक संस्थाएँ व्यक्तिगत सन्दर्भ में कार्य करती है। अतः राजनीति विज्ञान की परिभाषाओं में व्यक्ति का महत्व संस्थाओं से अधिक है। मानवीय तत्व के रूप में राजनीति विज्ञान की परिभाषायें निम्न प्रकार से हैः–

1. हरमन हैलर (Hermann Heller) ने ''एनसाइक्लोपिडिया ऑफ सोशल साइन्सेज'' (Encyclopedia of Social Science) में लिखा है कि, ''राजनीति विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूप का निर्धारण इसकी मानव सम्बन्धी मौलिक अवधारणाओं द्वारा होता ळें

2. लास्की (Laski) के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान संगठित राज्यों के सन्दर्भ में मानव–जीवन के अध्ययन से सम्बन्धित है।

राजनीति विज्ञान एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है, जिसके अन्तर्गत राज्य और सरकार का केवल संस्थागत, विधिक एवं औपचारिक (संगठनात्मक) अध्ययन के अलावा मानवीय जीवन के राजनीतिक एवं जीवन से सम्बन्धित पक्षों का अध्ययन किया जाता है। परम्परागत राजनीति विज्ञान की परिभाषाओं में चतुर्थ दृष्टिकोण उचित प्रतीत होता है। इस प्रकार से समाज विज्ञानों में राजनीति विज्ञान के मानव के राजनीतिक जीवन के सन्दर्भ में व उससे सम्बन्धित राज्य, सरकार तथा सम्बन्धित संस्थाओं एवं संगठनों का अध्ययन किया जाता है।'

राजनीति विज्ञान को ऐसा विज्ञान के रूप में स्वीकार कर सकते हैं, जो मानव के इन कार्यकलापों का अध्ययन करता है, जिनका सम्बन्ध उसके राज्य नाम संगठन से होता है और जिसके अन्तर्गत सरकार का भी अध्ययन सम्मिलित है।

राजनीति विज्ञान की परम्परागत दृष्टिकोण की प्रकृति एवं क्षेत्र

राजनीति विज्ञान की शब्दावली और परिभाषा के परिप्रेक्ष्य में लेखकों में एकमत नहीं है, उसी प्रकार से राजनीति विज्ञान की प्रकृति एवं क्षेत्र के बारे में भी एकमत नहीं है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र (अध्ययन क्षेत्र) का अर्थ, उसकी अध्ययन वस्तु (विषय सामग्री) से है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत हम उन सब तथ्यों और सामग्री को एकत्रित करते हैं। जिनका अध्ययन इस विषय के अन्तर्गत किया जाता है अथवा किया जाना चाहिए। जहाँ यूनानी (Greek) विचारकों ने राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में सम्पूर्ण नागरिक जीवन को माना है। राजनीति विज्ञान परम्परागत दृष्टिकोण के पक्ष में गार्नर, 3.ब्लंट्शली, गैरिस, एक्टन, जकारिया, कौटिल्य आदि ने इसमें केवल राज्य के अध्ययन को शामिल किया है, सीले व लीकॉक आदि ने इसमें केवल सरकार के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया है, पॉल जैनेट, गिलक्राइस्ट एवं डिमॉक आदि ने इसमें केवल राज्य और सरकार के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया है तथा लास्की और हरमन हैलर आदि ने इसमें राज्य, सरकार के साथ मानवीय–तत्व के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया है। डॉक्टर गार्नर के अनुसार इसकी मौलिक समस्याओं में साधारणतः प्रथम राज्य की उत्पत्ति और उसकी प्रकृति का अनुसंधान, द्वितीय राजनीतिक समस्याओं की प्रगति, उनके इतिहास तथा उनके स्वरूपों का अध्ययन तथा तृतीय जहां तक सम्भव हो, इसके आधार पर राजनीति प्रगति और विकास के नियमों का निर्धारण करना सम्मिलित है। डॉ. लीकॉक ने लिखा है कि राजनीतिक विज्ञान केवल सरकार की ही विवेचना करती है। राज्य शब्द उनकी राजनीति विज्ञान कि परिभाषा में नहीं आता है। फ्रांसीसी विचारक ब्लंट्शाली के अनुसार राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध राज्य के आधारों से है और वह उसकी आवश्यक प्रकृति, उसके विविध रूपों, उसकी अभिव्यक्ति तथा उसके विकास का अध्ययन करता है।

राजनीति विज्ञान के परम्परागत स्वरूप कि क्षेत्र के विषय में तीन प्रकार की विचारधारायें आती हैं–

1. जिसके अनुसार केवल राज्य को ही राजनीति विज्ञान का विषय माना गया है।
2. जिसके अनुसार केवल सरकार को ही राजनीति विज्ञान का विषय माना गया है।
3. जिसके अनुसार राज्य और सरकार दोनों को अध्ययन का विषय माना गया है।

हम देखते हैं कि मानव के पारस्पारिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति उसके राज्य नायक संगठन एवं शासन (सरकार) द्वारा ही होती है। राजनीतिक विज्ञान मानव के कार्यकलापों के उस पहलू का अध्ययन करता है, जिसका सम्बन्ध राज्य और सरकार से होता है।

विलोबी का मत है कि राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में राज्य एवं सरकार के अलावा कानून के अध्ययन को भी स्थान दिया जाना चाहिये। फ्रेडरिक पोलक ने तो राजनीति विज्ञान के समस्त क्षेत्र को अध्ययन की दृष्टि से ''सैद्धान्तिक'' व ''व्यावहारिक'' राजनीति विज्ञान में बाँटा है।

इसी प्रकार से गैटिल ने इसको तीन भागों में बांटा है – (क) राज्य की उत्पत्ति और राजनीतिक संस्थाओं व सिद्धान्तों का विकास (ख) विद्यमान राजनीतिक संस्थाओं और सिद्धान्तों का अध्ययन एवं (ग) राज्य का भावी अर्थात् स्वरूप निश्चित करना।

क्षेत्र–सम्बन्धी पक्ष को परम्परागत राजनीति विज्ञान को यूनेस्को (UNESCO) अर्थात् संयुक्त राष्ट्र संघीय शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (United Nations Educational Scientific & Cultural Organization यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक प्रमुख संस्था है, जिसने सितम्बर, 1948 में विश्व के प्रमुख राजनीति शास्त्रियों का सम्मेलन आयोजित किया) सम्मेलन ने (परम्परागत) राजनीति विज्ञान के अध्ययन–क्षेत्र के सन्दर्भ में निर्णय लिये। इसमें राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में निम्न अध्ययन सामग्री को स्थान दिया गया –

1. राजनीति के सिद्धान्त– अतीत एवं वर्तमान राजनीतिक सिद्धान्त का इतिहास एवं राजनीतिक विचारों का अध्ययन।
2. राजनीतिक संस्थाएँ– संविधान, राष्ट्रीय सरकार, क्षेत्रीय और स्थानीय सरकार, लोक प्रशासन, सरकार के आर्थिक और सामाजिक कार्य एवं तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाओं का अध्ययन।
3. राजनीतिक दल,समूह एवं लोकमत– राजनीतिक दल एवं समूह (दबाव समूह आदि) तथा समुदाय का राजनीतिक व्यवहार, लोकमत तथा शासन में नागरिकों के भाग लेने की प्रक्रिया का अध्ययन।
4. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध– अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय विधि, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासन का अध्ययन।

अनेक परम्परागत राजनीतिज्ञों तथा यूनेस्को के दृष्टिकोण के आधार पर परम्परागत राजनीति विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र मे निम्नलिखित विषय–सामग्री हैः–

मानव का अध्ययन

राजनीति विज्ञान के विषय में व्यक्ति की स्थिति केन्द्रीय है। यदि राजनीति शास्त्र में व्यक्ति का अध्ययन नहीं किया जाए तो उसका अध्ययन नीरस, शुष्क और अपूर्ण हो जायेगा। मानव जीवन के अनेक पक्ष हैं और परम्परागत दृष्टिकोण के अनुसार मानव–जीवन के राजनीतिक पक्ष का अध्ययन राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आता है। सभी राजनीतिक संस्थायें, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, उसके (मानव के) द्वारा संचालित, उसकी सुरक्षा, विकास एवं उन्नति के लिए विद्यमान है। यदि वे व्यक्ति और समाज के हितों की पूर्ति नहीं करती तो वे अर्थशून्य हो जायेगी और उनकी उपयोगिता समाप्त हो जायेगी। उनका महत्व इसी में है कि वे व्यक्ति एवं समाज के मूल्यों को प्राप्त करें और उन्हें सुखी बनायें। इसमें लास्की का मत है कि ''राजनीति विज्ञान संगठित राज्यों के सन्दर्भ में मानव–जीवन के अध्ययन से सम्बन्धित है।'' अतः राजनीति विज्ञान इस तथ्य का अध्ययन करता है कि किसी राजनीतिक समाज में राज्य द्वारा व्यक्तियों को कौन–कौन से अधिकार दिये गये हैं और व्यक्तियों द्वारा राज्य के प्रति किन कर्त्तव्यों का पालन किया जाता है ? राजनीतिक संस्थाओं एवं उनकी नीतियों, कानूनों, क्रियाओं आदि का महत्व तभी सिद्ध होगा, जब वे व्यक्ति एवं समाज के मूल्यों की प्राप्ति तथा उनके हितों की रक्षा करने में सहायक हो। इस सन्दर्भ में कैटलिन ने कहा कि ''राजनीति विज्ञान नियन्त्रक एवं नियन्त्रित के व्यापक सम्बन्धों का अध्ययन है।''

राज्य का अध्ययन

राजनीति विज्ञान में राज्य का अध्ययन सर्वांगीण एवं सर्वकालीन होता है। राज्य का सम्पूर्ण अध्ययन राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आता है। यह राज्य के अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन करता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक राज्य का विकास विभिन्न अवस्थाओं से गुजर चुका है और इसकी पूरी सम्भावना है कि भविष्य में भी राज्य का विभिन्न रूपों में विकास होगा। इस सन्दर्भ में गेटेल ने लिखा है ''राजनीति विज्ञान 'राज्य कैसा है' की ऐतिहासिक गवेषणा, राज्य कैसा है' विश्लेषणात्मक अध्ययन और 'राज्य कैसा होना चाहिए' की राजनीतिक व नैतिक परिकल्पना है'' इसी प्रकार राज्य के सन्दर्भ में अरस्तू ने कहा है कि, ''राज्य की उत्पत्ति जीवन के लिए हुई और सद्जीवन के लिए उसका अस्तित्व बना हुआ है।''

राजनीति विज्ञान में प्रारम्भिक राजनीतिक संस्थाओं और संगठनों का अध्ययन वर्तमान और भविष्य के लिए लाभदायक रहकर व्यक्ति व समाज के मूल्यों की प्राप्ति में सहायक होता है। अतः हम राज्य के अध्ययन को तीन भागों में बाँट सकते हैं – (क) ''राज्य कैसा रहा है'' (अतीत) का अध्ययन (ख) ''राज्य कैसा है'' (वर्तमान) का अध्ययन' (ग) ''राज्य कैसा होना चाहिए'' (भविष्य) का अध्ययन।

'राज्य कैसा रहा है' अर्थात् राज्य के अतीत का अध्ययन

राजनीति विज्ञान में प्राचीनकाल में राज्य नामक संस्था का उदय (उत्पत्ति) किस प्रकार से हुआ और वर्तमान काल तक राज्य का विकास किस प्रकार से हुआ, का अध्ययन किया जाता है, जहाँ ''नगर राज्य'' से आधुनिक ''राष्ट्र राज्य'' तक के विकास का अध्ययन किया जाता है। इसी के साथ में अतीत में राज्य का कार्यक्षेत्र बहुत सीमित था और किस प्रकार वर्तमान काल तक उसके कार्यक्षेत्र में निरन्तर वृद्धि हुई है, इसका भी राजनीति विज्ञान में अध्ययन किया जाता है। इसके सन्दर्भ में विभिन्न विचारों व अवधारणाओं का अध्ययन भी इसमें किया जाता है।

''राज्य कैसा है अर्थात् राज्य के वर्तमान का अध्ययन

राजनीति विज्ञान में राज्य के आधुनिक रूप को ''राष्ट्र राज्य'' कहा जाता है, जो भूतकाल के राज्य से भिन्न है। इस राष्ट्र राज्य की प्रकृति तथा विशेषताओं का अध्ययन अब राजनीति विज्ञान में किया जाता है। आधुनिक राष्ट्र राज्य जहाँ लोक कल्याण के दायित्व और एक संविधानवादी राज्य को स्वीकार करते हैं। वर्तमान में राष्ट्र राज्य का कार्यक्षेत्र दो भागों में विभाजित किया गया है। आन्तरिक कार्यक्षेत्र व बाह्य कार्यक्षेत्र। जहाँ आन्तरिक कार्य क्षेत्र में राज्य के प्रमुख कार्य है– शांति, सुरक्षा एवं व्यवस्था बनाये रखना, राष्ट्रीय संविधान के अनुसार शासन करना, न्याय करना तथा विभिन्न जनकल्याणकारी कार्य करना रहा है, वही राष्ट्र राज्य के बाह्य कार्यक्षेत्र में विदेश नीति का संचालन, अन्य राज्यों से सम्बन्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों का पालन करना है। अतः राजनीति विज्ञान आधुनिक राष्ट्र–राज्य से सम्बन्धित विभिन्न विचारधाराओं का भी अध्ययन करता है।

''राज्य कैसा होना चाहिये अर्थात् राज्य के भविष्य का अध्ययन''

जहाँ अतीत हमें यह बताता है कि राज्य प्रारम्भ से ही एक विकासशील संस्था है तथा इसलिए यह माना जाता है कि भविष्य में भी राज्य अपने नवीन स्वरूपों में विकसित होगा। अतः राजनीति विज्ञान उन विचारधाराओं का अध्ययन करता है, जो राज्य के वर्तमान स्वरूप, संगठन तथा कार्यों में परिवर्तन चाहती है। इस दृष्टि से राजनीति विज्ञान नवीन उदारवाद, बहुलवाद, समाजवाद, साम्यवाद तथा अराजकतावाद इत्यादि विचारधाराओं का अध्ययन करता है। यह उल्लेखनीय है कि ''भविष्य के राज्य'' के सन्दर्भ में इन विचारधाराओं मे काफी मतभेद है, अतः यह कहना उचित होगा कि राजनीति विज्ञान का भविष्य के राज्य के सन्दर्भ में अध्ययन तथ्यों की तुलना मे अनुमान पर अधिक आधारित है। साधारणतः यह अनुमान लगाया जाता है कि भविष्य में राज्य का संगठन अधिक लोकतांत्रिक होगा। उसकी नीतियाँ अधिक लोककल्याणकारी होंगी तथा वह अन्तराष्ट्रीय विधि के नियन्त्रण को अधिक मान्यता देगा।

सरकार का अध्ययन

जहाँ पर फ्राँस के लूई चौहदवें ने कहा की ''मैं ही राज्य हूँ।''(I am the state) राज्य एक अमूर्त संस्था है। इसका मूर्त रूप सरकार है। राज्य सरकार के माध्यम से कार्य करता है। सरकार राज्य की इच्छा को प्रकट करती है, उसे कार्यान्वित करती है तथा उसकी सिद्धि के

लिए प्रयास करती है। राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत सरकार (शासन) के विगत एवं आधुनिक रूपों का अध्ययन किया जाता है। यह वर्तमान काल में विभिन्न देशों में मौजूद शासन प्रणालियों का सरल व तुलनात्मक अध्ययन करता है। यह किसी शासन के अन्तर्गत मौजूद शासन के तीनों अंगों (व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका) तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध, सरकार के ऐतिहासिक विकास, उनके भिन्न स्वरूपों (प्रकारों), प्रशासन(नौकरशाही) राजनीतिक प्रक्रियाओं जैसेः– निर्वाचन–प्रणाली, प्रतिनिधित्व, राजनीतिक दल, दबाव समूहों, जनमत आदि का अध्ययन करता है।

स्थानीय एवं राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन

जहाँ स्थानीय एवं राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन और इन समस्याओं के हल के उपाय राजनीति विज्ञान सुझाता है। यह स्थानीय समस्याओं के अध्ययन एवं उनके हल के लिए स्थानीय स्वशासन (नगरीय व ग्रामीण) संस्थाओं के संगठन, कार्यप्रणाली तथा कार्यक्षेत्र का अध्ययन करता है। उदाहरण के लिए भारत में स्थानीय समस्याओं के हल के लिए प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण (पंचायती राज) की व्यवस्था को लागू किया गया है। वहीं राजनीति विज्ञान राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा विकास के मार्ग में बाधक समस्याओं का अध्ययन करता है और इनके हल के उपाय सुझाता है। उदाहरण के लिए भारत में उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए राजनीति विज्ञान ने भावनात्मक एकता, पंथ निरपेक्षता, सामाजिक न्याय, योजनाबद्ध विकास आदि के साधनों पर बल दिया है।

राजनीतिक दर्शन का अध्ययन

राजनीतिक दर्शन राजनीतिक विज्ञान का विषय है यह इसका आधार है। गिलक्राइस्ट ने राजनीतिक दर्शन में उन राजनीतिक सिद्धान्तों, राज्य के स्वरूप, उद्देश्य, राज्य, व्यक्ति एवं सरकार व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों आदि की विवेचना की जाती हैं, जिन पर राजनीति विज्ञान आधारित है। प्लेटो से लेकर मार्क्स तक जितने भी राजनीतिक दार्शनिक हुए है, उन्होंनें राजनीतिक सिद्धान्तों को निर्धारित करने का प्रयास किया है। अतः राजनीति शास्त्र के लिये राजनीतिक दर्शन का अध्ययन अनिवार्य है। लगभग सभी राजनीतिक दार्शनिकों ने राजनीतिक सिद्धान्तों को निर्धारित करने का प्रयास किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों व सम्बन्धों का अध्ययन

राजनीति विज्ञान किसी एक राज्य का अध्ययन नहीं करता। राज्य अकेला कार्य नहीं करता। एक राज्य के अन्य राज्यों से भी राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सम्बन्ध होते हैं। वैज्ञानिक व औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व एक विशाल राजनीतिक समुदाय में परिवर्तित हो गया है और विभिन्न राष्ट्रीय राज्य उसकी इकाई मात्र बनते जा रहे हैं। वर्तमान समय की अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ इन राष्ट्रीय राज्यों के जीवन को प्रभावित करती है, अतः राजनीति विज्ञान इन विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन करता है और उनके समाधान के उपाय सुझाता है। कोई राज्य अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण की उपेक्षा नहीं कर सकता क्योंकि इसका प्रभाव राज्य की आन्तरिक एवं बाहरी नीतियों तथा नागरिकों के सामान्य जीवन पर पड़ता हैं। जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय युग में राजनीति के अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष का तेजी से विस्तार हुआ है और इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया गया है – अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (International Politics) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन (International Organizations) आदि। राजनीति विज्ञान इन सभी विषयों का अध्ययन करता है।

राजनय

राजनीति विज्ञान में राजनय का अध्ययन किया जाता है। इनमें राज्यों के पारस्परिक सम्बन्ध मूलतः राज्यों की विदेश नीति और राजनय की कुशलता व चातुर्यपूर्णता पर निर्भर करते है।

राजनीतिक सिद्धान्तों विचारधाराओं का अध्ययन

राजनीति विज्ञान में प्राचीन काल से आधुनिक युग तक अनेक राजनीतिक विचारधाराओं की उत्पत्ति एवं विकास हुआ है। इन राजनीतिक विचारधाराओं ने राजनीति के यथार्थवादी एवं आदर्शवादी मूल्यों पर विचार किया है। इनके द्वारा राज्य की उत्पत्ति, प्रकृति, उद्देश्य, साधन, कार्यों इत्यादि पर विचार किया गया है और इन्होंने राज्य व व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों के अलावा कानून, स्वतन्त्रता, समानता आदि पर भी अपना मत प्रकट किया है। राजनीति विज्ञान के इतिहास में अनेक विचारधाराओं का अस्तित्व दिखायी देता है, जैसे समाजवाद, बहुलवाद इत्यादि। राजनीति विज्ञान इन सभी विचारधाराओं का सरल व तुलनात्मक अध्ययन करता है। वह यह भी अध्ययन करता है कि अतीत में इन विचारधाराओं ने मानव के राजनीतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया **हैं**, राजनीति विज्ञान यह भी देखता है कि किन परिस्थितियों में किस विचारधारा का जन्म होता है? यह विचारधारा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली नवीन प्रकृतियों का भी अध्ययन करता है।

राजनीतिक दलों व दबाव समूहों का अध्ययन

राजनीति विज्ञान में शासन के संचालन के लिए राजनीतिक दलों व दबाव समूहों का विशेष महत्व है। जहाँ राजनीतिक दल चुनावों मे भाग लेते हैं और सरकार का निर्माण करते हैं और उनका संचालन करते हैं, वही राजनीतिक दलों की तुलना में दबाव समूह गुप्त एवं अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं किन्तु वे सरकार की नीतियों के निर्माण को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। राजनीतिक दल व दबाव समूह लोकमत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अतः राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में इन दोनों का अध्ययन भी सम्मिलित किया गया हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय विधि

राजनीति विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय विधि का विषय है। प्रत्येक राज्य सार्वभौम होता है तथा उसकी सीमायें निर्धारित होती है परन्तु फिर भी युद्ध और शान्ति के प्रश्न, युद्धबन्दियों का प्रश्न, महासागर के तट, खुला महासागर, प्रत्यर्पण जैसे अनेक विषय है, जिन्हें राज्य स्वयं निश्चित नहीं करता। इन विषयों को अन्य राज्यों के सन्दर्भ में ही निश्चित किया जाता है। इन्हें जो विधि निर्धारित करती है, उसे अन्तर्राष्ट्रीय विधि कहते हैं।

अन्य समाज विज्ञानों का अध्ययन

राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, मानव विज्ञान, इतिहास का अध्ययन भी किया जाता है, जैसे मार्क्स ने आर्थिक क्षेत्र से, ग्राह्म वालास ने मनोविज्ञान व मैक्डूगल ने भी मनोविज्ञान से सम्बन्धित अध्ययन को जोड़ा है, इसी सन्दर्भ में हसजार और स्टीवेन्सन ने ''राजनीति विज्ञान, जो एक समय अपने अध्ययन के लिए राजकीय तत्वों का ही ध्यान करता था, आज अपने प्रशासनिक तत्वों के अध्ययन मे आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक आधारों की भी विवेचना करता है।'' अतः राजनीति विज्ञान को एक अन्तः सम्बन्धित अध्ययन बनाया गया है।

शासन प्रबन्ध का अध्ययन

राजनीति विज्ञान राज्य की शासन व्यवस्था का अध्ययन करवाती है, किस देश में समय व परिस्थिति के अनुसार शासन की व्यवस्था की जाती है? अतः आज विश्व में प्रजातांत्रिक व्यवस्था का प्रचलन बढ़ रहा है परन्तु इसी के साथ में सैनिक शासन व निरंकुशतन्त्र की बुराईयों का भी अध्ययन किया जाता है, इसलिए आज आतंकवाद जहाँ पनप रहा है, वे सभी शासन व्यवस्था कुशासन का उदाहरण है। अतः राजनीति विज्ञान ही एक ऐसा विषय है, जो इन समस्याओं का गहन अध्ययन कर इनका समाधान खोजने का प्रयास कर सकती है।

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र व उसके विविध प्रकार – सर फ्रेडरिक पोलक के अनुसार

सैद्धान्तिक राजनीति (Theoretical Politics)	क्रियात्मक राजनीति (Applied Politics)
क. राज्य का सिद्धान्त शासन की उत्पत्ति 1. ऐतिहासिक 2. विवेक सम्बन्धी संविधान, शासन के रूपों का वर्गीकरण, राजनीतिक प्रभुसत्ता। ख. शासन के सिद्धान्त– संस्थाओं के रूप, प्रतिनिधि एवं मंत्रीमण्डल शासन, कार्यकारी विभाग – सुरक्षा एवं व्यवस्था, राजस्व एवं कराधान, राष्ट्रों की सम्पदा (धन), अधिशासी कानून का क्षेत्र व उसकी परिसीमाएँ ग. कानून का सिद्धान्त– विभाजन के लक्ष्य, सकारात्मक कानून का सामान्य चरित्र तथा वर्गीकरण (कानून का दर्शन अथवा सामान्य विधिशास्त्र कानूनों की शैली एवं मान्यता, व्याख्या एवं परिचालन, भाषा एवं शैली विधि निर्माण की कार्यशैलियाँ) घ. कृत्रिम मानव के रूप मे राज्य का सिद्धान्त। राज्य का अन्य राज्यों तथा व्यक्तियों के समूहों से सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय कानून।	क. राज्य शासन के वर्तमान रूप, परिसंघ एवं संघीय राज्य, स्वाधीनता, संरक्षित प्रदेश और परा–प्रादेशिक क्षेत्राधिकार। ख. शासन संविधानिक कानून एवं प्रथाएँ, संसदीय प्रणालियाँ, मंत्रिमण्डल तथा मंत्रियों का उत्तरदायित्व, प्रशासनिक रूप के संविधान, सेना, जलसेना, पुलिस, मुद्रा, बजट, व्यापार का राज्य द्वारा विनिमयन या अहस्तक्षेप। ग. कानून तथा व्यवस्थापन– विधायी प्रक्रिया (व्यवस्थापन व ज्ञापन आदि को सिद्धान्त का रूप देना), संसदीय प्रारूपण विशेष राज्यों को विधिशास्त्र, न्याय के न्यायालय तथा उनके तंत्र न्यायिक पूर्वदृष्टांत एवं प्रमाण। घ. राज्य मानवीकृत रूप में– कूटनीति, युद्ध एवं शांति, सम्मेलन संधियों और विधियाँ, न्याय, वाणिज्य,संचार आदि को प्रोत्साहन देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते आदि।

राजनीति विज्ञान का क्षेत्र (व्यापक भाव में तथा मुख्य शीर्ष)

व्यापक भाव में	मुख्य शीर्ष–2

1. राजनीतिक सिद्धान्त 1) राजनीतिक सिद्धान्त 2) राजनीतिक विचारों का इतिहास 2. शासन 1) संविधान 2) राष्ट्रीय सरकार 3) प्रादेशिक एवं स्थानीय शासन 4) लोक–प्रशासन 5) शासन के आर्थिक एवं सामाजिक कार्य 6) तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएँ 3. दल,समूह एवं जनमत 1) राजनीतिक दल 2) समूह एवं संघ 3) सरकार एवं प्रशासन में नागरिकों की भागीदारी 4) जनमत 4. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध 1) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति 2) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन व प्रशासन 3) अन्तर्राष्ट्रीय कानून	1. राज्यों की उत्पत्ति एवं विकास 2. राज्यों के वर्तमान संविधानों का वर्णन, विश्लेषण एवं तुलना 3. प्रशासनिक ढांचे, राजनीतिक प्रक्रियाएं तथा कानून की प्रणालियाँ 4. व्यापार सामाजिक संबन्धों एवं शिक्षा को नियमन सहित व्यक्तियों तथा समूहों पर राज्य द्वारा लागू विनिमय। 5. तकनीकी प्रक्रियाएँ एवं अभिकरण, जिनके माध्यम से कानूनों का निर्माण परिचलान, क्रियान्वयन एवं न्याय निष्पादन किया जाता है। 6. राजनीतिक दलों एवं दबावकारी गुटों का संगठन एवं गतिविधियाँ। 7. जनमत एवं प्रचार की प्रकृति। 8. राज्यों के बीच (राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं विचारधारात्मक) सम्बन्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं संगठनों के माध्यम से इन सम्बन्धों का विनियमन व उनका नियन्त्रण।

राजनीति विज्ञान के परम्परागत दृष्टिकोण की विशेषताएँ

प्राचीन काल में यूनान तथा रोम में राजनीतिक सिद्धान्त के निर्माण के लिए दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र, इतिहास, तर्कशास्त्र एवं कानून (विधि) की अवधारणाओं को जहाँ आधार बनाया गया था, वहीं मध्यकाल में राजनीतिक सिद्धान्त के निर्माण के लिए ईसाई धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण को आधार बनाया गया। इसके पश्चात् 16 वीं सदी के पुनर्जागरण आन्दोलन ने उस बौद्धिक राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जिससे राजनीति विज्ञान को धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से तो मुक्ति मिल गयी, साथ ही इसका सम्बन्ध पुनः प्राचीन यूनान व रोम के राजनीतिक चिन्तन से स्थापित होने लगा। पुनर्जागरण आन्दोलन ने ''राष्ट्र राज्य'' की अवधारणा को जन्म दिया। 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति ने राजनीतिक परिस्थितियों में ही बदलाव कर दिया, जिससे नवीन क्रांतियां हुई, जिनमें प्रमुखतः इंगलैण्ड की गौरवपूर्ण क्रांति तथा फ्रांस व संयुक्त राज्य अमेरीका की लोकतांत्रिक क्रांतियों ने परम्परागत राजनिति विज्ञान का विकास उदारवादी लोकतांत्रिक राजनीतिक विज्ञान के रूप में किया।

दार्शनिक, तार्किक, ऐतिहासिक, विधिक तथा नैतिक पद्धतियों को परम्परागत राजनीतिक विज्ञान के प्रयोग में लाया जाता हैं। 19वीं शताब्दी मे परम्परागत राजनीतिक विज्ञान ने विधिक, संस्थागत, संविधानिक, विवरणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धतियों पर विशेष बल दिया हैं। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में परम्परागत राजनीति विज्ञान के निर्माण के लिए एक नयी दृष्टि का विकास हुआ, जो अतीत की तुलना में अधिक व्यवहारवादी (यथार्थवादी) थी। इससे सरकार एवं इसके वैधानिक अंगों के बाहर के उन सामाजिक व राजनीतिक तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया, जो व्यवहार में सरकार की नीतियों को प्रभावित करती है। जहाँ परम्परागत राजनीतिक विज्ञान ने राजनीतिक संगठनों पर बल दिया। इसने उन सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों एवं आन्दोलनों के अध्ययन पर भी बल दिया, जो वास्तव में सरकार के औपचारिक संगठन से बाहर तो होते हैं किन्तु उसकी नीतियाँ एवं कार्यक्रमों को प्रभावित करते हैं।

परम्परागत राजनीति विज्ञान की मुख्य विशेषताओं का संक्षिप्त में निम्नलिखित तरीके से व्यक्त किया जा सकता है :–

दर्शनशास्त्र (कल्पना एवं तर्क) से प्रभावित अध्ययन

परम्परागत राजनीति विज्ञान में अनेक प्राचीन राजनीतिक वैज्ञानिकों ने तर्क एवं कल्पना के आधार पर राजनीति विज्ञान के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जैसे प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक का प्रतिपादन इसी आधार पर किया है। परम्परागत राजनीति शास्त्रियों में से अधिकांशतः राजनीति विज्ञान और दर्शनशास्त्र में न केवल अत्यधिक घनिष्ठता स्वीकारी है अपितु उनमें से अनेक राजनीति विज्ञान को दर्शनशास्त्र की एक शाखा जैसा माना है। इन राजनीतिक शास्त्रियों ने राजनीति विज्ञान और दर्शनशास्त्र के संयोग से ज्ञान की एक विशेष शाखा का निर्माण किया है जिसे राजनीतिक दर्शन (Political Philosophy) कहा जाता है और इसके आधार पर उन्होंने अपने राजनीतिक सिद्धान्त (Political Theory) का निर्माण किया है। उदाहरण के लिए रूसो की सामान्य इच्छा की अवधारणा राजनीतिक दर्शन से ली गई है। इसी प्रकार से ग्रीन का यह मत है कि ''राज्य का आधार शक्ति नहीं इच्छा है।'' उसके राजनीतिक दर्शन का ही विकास है। राजनीतिक दर्शन से प्रभावित होने के कारण परम्परागत राजनीतिक विद्वानों ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त के निर्माण के लिए प्राकृतिक विधि, ईश्वरीय विधि तथा प्राकृतिक अधिकार जैसे पारलौकिक एवं परा–बौद्धिक मान्यताओं को आधार बनाया है।

प्रमुख अध्ययन पद्धतियाँ

परम्परागत राजनीति विज्ञान में प्रायः निगमनात्मक पद्धतियाँ को लिया जाता है, इसमें प्रमुख अध्ययन पद्धतियाँ हैं – दार्शनिक पद्धति, नीति–शास्त्रीय

पद्धति तथा तर्कशास्त्रीय पद्धति। इसके अतिरिक्त इसमें विधिक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक आदि पद्धतियों को भी अपनाया है। डॉ. एस.पी. वर्मा ने परम्परागत राजनीति विज्ञान के अध्ययन हेतु अपनायी गई विभिन्न पद्धतियों को चार प्रकार से विभाजित किया है, ऐतिहासिक (Historical) विश्लेषणात्मक(Analyitcal) आदर्शात्मक–उपदेशात्मक (Normative - Prescriptive) तथा वर्णनात्मक परिभाषात्मक(Descriptive Taxonomical) डॉ. एस.पी.वर्मा के अनुसार अध्ययन पद्धतियाँ के ये चारों प्रकार परम्परागत राजनीति विज्ञान के विकास की चार अवस्थाओं को ज्ञात करते है।

मूल्य प्रधान (नैतिकता एवं राजनीतिक मूल्यों पर बल) अध्ययन

परम्परागत राजनीति विज्ञान प्रधानतः मूल्य प्रधान है, इसमें नैतिकता एवं राजनीतिक मूल्यों पर बल दिया जाता है। इसलिए यह आदर्श राज्य–व्यवस्था की स्थापना का समर्थक है। प्लेटो की 'रिपब्लिक' सेण्ट आगस्टाइन की 'ईश्वरीय नगर' (The city of God) टॉमस मूर की 'यूटोपिया' ऐसी कृतियां है, जिनमें मूल्य प्रधान एवं आदर्शात्मक राज्य–व्यवस्थाओं का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः परम्परागत राजनीति विज्ञान ने वास्तविक राजनीतिक जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए आदर्शवादी विचारों को प्रस्तुत किया है। जहाँ रूसो ने सामान्य इच्छा, बैंथम का अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख का सिद्धान्त तथा मिल की स्वतन्त्रता की अवधारणा भी अपनी प्रवृत्ति से मूल्य प्रधान हैं।

कानूनी औपचारिक तथा संस्थागत अध्ययनों की प्रमुखता

परम्परागत राजनीति विज्ञान ने उदारवादी संविधानों एवं शासन प्रणालियों का अध्ययन औपचारिक कानूनी एवं संस्थागत दृष्टि से किया है। डायसी, **मुनरो**, ऑग और जिंक आदि विद्वानों ने पुस्तकालय में बैठकर अपने राजनीतिक साहित्य की रचना की है, जो तर्कपूर्ण तो है, किन्तु मूलतः सैद्धान्तिक ही है। उन्होंने इस तथ्य की प्रायः उपेक्षा की है, कि उनके अध्ययन किये गये संविधान एवं शासनः–प्रणालियाँ व्यवहार में किस रूप में कार्य कर रही है?

व्यक्तिनिष्ठ तत्व की प्रधानता

परम्परागत राजनीति विज्ञान की अवधारणायें, मान्यतायें एवं निष्कर्ष इसके प्रतिपादकों के व्यक्तिगत अनुभव एवं दृष्टिकोण से प्रभावित रहे हैं। परम्परागत राजनीति विज्ञान का अध्ययन व्यक्तिनिष्ठ या व्यक्ति सापेक्ष सत्य को प्रस्तुत करता है। हॉब्स, लॉक तथा रूसो तीनों विद्वानों ने मानव स्वभाव पर विचार व्यक्त किये हैं किन्तु उन्होंने इसकी व्याख्या अपने वैयक्तिक दृष्टिकोण से ही की है। इन विद्वानों के विचारों को परानुभववादी (Trans-empirical) कहा गया है। परम्परागत राजनीति वैज्ञानिकों के व्यक्तिनिष्ठ अध्ययन का मूल कारण उनके द्वारा अपनाई गई, निगमनात्मक एवं दार्शनिक पद्धतियाँ है, जो अपनी प्रकृति से व्यक्तिनिष्ठ पद्धतियाँ हैं यद्यपि कुछ परम्परागत राजनीतिज्ञों ने ऐतिहासिक एवं विवरणात्मक पद्धतियों का भी प्रयोग किया है किन्तु वे इनका स्वतंत्र एवं शुद्ध प्रयोग करने में असमर्थ रहे हैं और उन्होंने अपने अध्ययन में इन पद्धतियों का प्रयोग भी निगमनात्मक या दार्शनिक पद्धतियों के सहायक के रूप में किया है। मैकियावली ने अपनी पुस्तक 'द प्रिस' में ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग उपरोक्त रूप में ही किया है।

प्रधानतया सीमित तथा संकुचित अध्ययन

आधुनिक राजनीति विज्ञान की तुलना में परम्परागत राजनीति विज्ञान अध्ययन क्षेत्र एवं दृष्टि में मुख्यतः सीमित एवं संकुचित है। इस सन्दर्भ में एक्सटीन तथा ऐप्टर ने कहा है कि ''परम्परागत दृष्टिकोण पाश्चात्य राजनीतिक व्यवस्थाओं तक सीमित रहा और प्रमुखतया एक संस्कृति संरूपण या समूह का ही इसमें अध्ययन किया गया। परम्परागत राजनीति विज्ञान ने पश्चिमी जगत के उदारवादी संविधानों एवं शासनों का भी प्रायः सैद्धान्तिक एवं आदर्शवादी अध्ययन के रूप में किया है।

अध्ययन विषय में निरन्तरता

परम्परागत राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में सीमित परिवर्तन हुए है, इसके अध्ययन क्षेत्र में निरन्तरता एवं सहमति का लक्षण प्रमुख रूप से ही देखते हैं। एक लम्बे समयान्तराल से उसके प्रमुख अध्ययन विषय रहे हैं, राज्य एवं सरकार के औचित्य को सिद्ध करना, न्याय, आदर्श राज्य व्यवस्था का चित्रण प्रस्तुत करना, स्वतन्त्रता, समानता, कानून, सम्प्रभुता, राष्ट्रवाद आदि धारणाओं की दार्शनिक एवं मूल्यात्मक व्याख्या करना जबकि वर्तमान काल में परम्परागत राजनीति विज्ञान व्यक्ति की स्वतन्त्रता व अधिकार पर मानव अधिकारों के रूप में विशेष बल दे रहा ळें

निष्कर्ष एवं सुझाव

परम्परागमत स्वरूप में राजनीति विज्ञान कल्पना एवं दर्शन पर आधारित है। यह अपने प्रतिपादक राजनीतिक दार्शनिकों एवं चिन्तकों के व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण से प्रभावित रहता है। इसक विचारक दर्शनशास्त्र या आचारशास्त्र से प्रभावित रहे है तथा उन्होंने मानवीय चिन्तन में सामाजिक तथ्यों एवं मूल्यों की ओर ज्यादा ध्यान दिया है। जहाँ हम यूनानी विचारकों में नैतिक जीवन तथा मध्ययुग में ईश्वरीय राज्य की स्थापना जैसे आदर्शवादियों का अध्ययन करतें है। इसलिए इन्हें परानुभवादी कहते है तथा इनकी अध्ययन प्रणाली निगमनात्मक होती है। परम्परागत अध्ययन की असफलता के कारण राजनीति विज्ञान का आधुनिक दृष्टिकोण आया। जहां राजनीतिक विज्ञान सैद्वान्तिक दृष्टि से विज्ञान बन चुका है परन्तु जब हम इसे व्यवहारिक जीवन में अपनाते हैं तो यह कला बन जाती है। वर्तमान समय में राजनीति विज्ञान का अध्ययन सभी के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनता जा रहा है।

राजनीति विज्ञान एक गतिशील विज्ञान है और इसलिए यह आशा की जाती है कि समय व परिस्थितियों के साथ–साथ इसका अध्ययन क्षेत्र भी लगातार विकसित होता जा रहा है। आधुनिक समय में राज्य के स्वरूप में एक महान क्रान्ति आई है। आज राज्य का स्वरूप एक ''पुलिस राज्य'' तक सीमित नहीं हैं, आज उसका स्वरूप ''लोककल्याणकारी'' है। जीवन की विविधता, प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली का उदय, जनकल्याणकारी

राज्य की धारणा, नियोजित आर्थिक विकास (Planned Economic Devolopment) और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व का एक इकाई के रूप में परिणत हो जाता है। राज्य के कार्य के रूप में आज यह कहावत प्रचलित हो गयी है कि ''पालने से लेकर शमशान तक'' (From cradle to grave) राज्य के कार्य हैं। वैण्डेल विल्की (अमरीकन राजनीतिज्ञ) ने अपनी पुस्तक ''एक विश्व'' (One world) नामक पुस्तक की रचना की है। जिससे यह प्रतीत होता है कि राज्य का कार्यक्षेत्र और उसमें पारस्परिक सम्बन्धों में वृद्धि हो रही है। इसलिए हम कह सकते हैं, कि राजनीति विज्ञान का क्षेत्र उतना ही व्यापक है, जितना की समय और प्रदेश। (The scope of Political Science is Co-existensive with time and scope) पहले जहाँ राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन पर बल दिया जाता था, वहीं आज राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन के साथ राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन पर भी बल दिया जाता है। व्यवहारवादी उपागम से राजनीति विज्ञान में एक नयी क्रांति आ गयी है। इसने राजनीति विज्ञान मे नये क्षेत्र खोल दिये हैं तथा उसे कई पद्धतियाँ एवं नई शैलियाँ प्रदान की है।

राजनीति विज्ञान का विषय विस्तृत एवं व्यापक है, परन्तु प्रमुख बात यह है कि आधुनिक राजनीति विज्ञान के विकास के साथ–साथ ही इसके अध्ययन क्षेत्र में भी लगातार वृद्धि होती जा रहा है। इसके अन्तर्गत जहाँ राज्य एवं सरकार के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य का अध्ययन किया जाता है, वहीं इसमें राजनीतिक दर्शन, राजनीतिक विचारधाराओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं, राज्य एवं व्यक्ति के सम्बन्धों, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, राजनय, अन्तर्राष्ट्रीय विधि, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त, कानून, स्वतन्त्रता, समानता, अधिकार, शासन के प्रकार एवं अंगो, प्रतिनिधित्व, राज्य के कार्यों, राजनीतिक दलों, दबाव समूह, जनमत इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। मानव एक गतिशील एवं परिवर्तनशील प्राणी है अतः राजनीति विज्ञान समयानुकूल बनाने के लिए परिवर्तनों, चुनौतियों एव समस्याओं का भी अध्ययन करना पड़ता है। वर्तमान में राजनीति विज्ञान उन समस्त समुदायों का भी अध्ययन करने लगा है,जो मूलतः अराजनीतिक प्रकृति के हैं किन्तु वे राज्य की नीतियाँ व निर्णयों को प्रभावित करते हैं। जहाँ आधुनिक युग में राजनीति विज्ञान का लगातार अन्तर्राष्ट्रीयकरण होता जा रहा है और इसके साथ ही राजनीति विज्ञान में अध्ययन क्षेत्र का भी विस्तार होता जा रहा है।

Definition

1. ''It (Political Science) is thus a study of the state in the past, present and future of Political organization function of political institution and political theories.'' R.G. Gettle.
2. "Political Science is the Science of the state." - Gettel
3. "Political Science begins and ends with the state" - Garner
4. "Political Science is the science which is concerned with the state which endeavours to understand and comprehed the state in its fundamental conditions in its essential nature, its various forms of main infestations' its development " - Bluntschli
5. "Political Science considers the state, as an institution of power, in the totality of its relations, its origin, it setting (land and people), its object, its ethical significance, its economic problems, its life conditions, its financial sides, its end ets." Garies"
6. "Political Science deals with Government" – Leacock - Elements of Political science P.3
7. "Political Science investigates the phenomena of Government as political Economy deals with wealth, Biology with life, Algebra with numbers and Geometry with space and magnitude" – Seeley
8. "Political Science is concerned with the state and its instrumentity Government" – Dimock
9. "Political Science deals with the general problems of the state and Government" – Gilchrist
10. "Political Science is that part of social science which treats of the foundations of the state and the principles of Government" - Paul Janet
11. "It may be said that the character of Political Science, in all of its parts is determined by its basic pre-supposition regarding man" – Hermann Heller
12. "The study of Politics concerns itself with the life of men in relation to organized states" – Laski
13. "Political Science is thus a historical investigation of what the state has been, an analytical study of what the state is and a politico-ethical discussion of what the state should be." R.G. Gettell – Introduction to political Science. P-4

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *R.**G.** Gatel- " Introduction to **Political** Science", P-4*
2. *Gilcriste- ' Principal of Political Science', P-2*
3. *एस.पी.वर्मा, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त पृ. 3*
4. *सी.एस.हाइमेन 'द स्टडी ऑफ पॉलिटिक्सः द प्रजेण्ट स्टेट ऑफ पॉलिटिकल साइन्स अध्ययन 03*
4. *डॉ. मधुमुकुल चतुर्वेदी– ''राजनीति विज्ञान के मूल आधार, पृष्ठ 1–16*
5. *सी.ई.मेरियम– दि प्रजेण्ट स्टेट ऑफ दि स्टेडी ऑफ पॉलिटिक्स, अमेरिका पॉलिटिकल साइन्स रिव्यू खण्ड 15 संख्या 1, 18, 21 पृष्ठ 173–185*
6. *डॉ. नन्दिनी उप्रेती ''राजनीति विज्ञान के मूल आधार, ''राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 2003 पृ. 1–23*
7. *लिकॉक– एलीमेन्ट्स ऑफ पॉलिटिकल साइन्स पृ. 03*
8. *Maitland- Collected Paper Vol-111 P-302*
9. *Garner- Political Science and Government P- 11*
10. *Sir F. Pollock History of the Science of politics, p-2*
11. *G.E.C. Catline- Systematic Politics P-48.51*
12. *पी.के.चड्डा– राजनीतिक शास्त्र के सिद्धान्त, 'आदर्श प्रकाशन जयपुर पृ. 1–16*
13. *ज्ञान सिंह संधु– ''राजनीतिक सिद्धान्त, ''दिल्ली विश्वविद्यालय*

14. *पुखराज जैन– राजनीति विज्ञान, एस.बी.बी.जी पॉब्लिकेशन आगरा*
15. *एस.सी.सिंहल– राजनीतिक सिद्धान्त ''लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा*
16. *ए.डी.आर्शीवादम् तथा कृष्णकान्त मिश्रा ''राजनीतिक विज्ञान, एस. चन्द कम्पनी, लि. नई दिल्ली*
17. *ओमप्रकाश गाबा '' राजनीतिक सिद्धान्त, की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोयडा*
18. *जे.सी.जौहरी एवं सीमा जौहरी – आधुनिक राजनीति विज्ञान सिद्धान्त,, स्टलिंग पब्लिकेशन प्रा.लि. नई दिल्ली*
19. *एस.पी.जैन '' पॉलिटिकल थ्योरी, आर्थस गिल्ड पब्लिकेशन, दिल्ली*
20. *डॉ.एस.एल. वर्मा राजनीति में अनुसंधान राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2013 पृष्ठ 53–54*
21. *हैराल्ड जे. लास्की– ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स*
22. *प्रो. जी. के मुखर्जी Scope of Polical Science, Indian Jonrnal of Political Science oct-Dec-1954.*
23. *हरमन हैलर एनसाइक्लोपिडिया ऑफ सोशल साईसेज*
24. *Sir Fredrick Pollok- An introduction of history of the Science of Politics Page 9-10*
25. *Internation Political Science Association ds xBu ds ;wusLdks (UNESCO) dh lfefr dk izfrosnu o W.A. Robson The University Teaching of Science-Political Science Appendix – ii*
26. *C.C Rodee, C.Q. Christrol Land T.J. Anderson Introduction of Political Science P.5*
27. *Joseph Dunner, Dictionary of Political Science, 1964 Introduction, PP XIII- XI*